पुरानी से नई तक: व्यवस्था में परिवर्तन

"फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया" (यिर्मयाह 31:31, 32क)।

नई वाचा बाइबल की महान वाचा है। इसकी योजना बनाई गई, प्रतिज्ञा की गई, भविष्यवाणी की गई और अब यह लोगों के लिए देकर समर्पित की गई है। पुराने नियम में नई वाचा से सम्बन्धित कई भविष्यवाणियां मिलती हैं, परन्तु इनमें से सबसे सम्पूर्ण भविष्यवाणी यिर्मयाह 31:31–34 की है।

नई वाचा के बारे में बताने वाले और भी कई पद हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह 55:3 कहता है:

"कान लगाओ, और मेरे पास आओ;
सुनो, तब तुम जीवित रहोगे;
और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा
अर्थात दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा।"

पौलुस ने प्रेरितों 13:34 में ये पद यीशु के लिए लागू किए। नई अर्थात अनन्त वाचा के अन्य हवाले हैं (इब्रानियों 13:20)।

"मैं उनसे यह वाचा बान्धूंगा, कि मैं कभी उनका संग छोड़कर उनका भला करना न छोडूंगा; और अपना भय मैं उनके मन से ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे" (यिर्मयाह 32:40; देखिए 50:5)।

"मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धूंगा, वह सदा के लिए वाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊंगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्थान बनाए

रखूंगा'' (यहेजकेल 37:26; 16:60-62 भी देखिए)।

''और वह प्रधान एक सप्ताह के लिए बहुतों के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा'' (दानिय्येल 9:27क)।

''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है,'' सेनाओं के यहोवा का यही वचन है (मलाकी 3:1)।

पुरानी वाचा की उपेक्षा हुई

इस्राएल के पतन के समय यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी। परमेश्वर ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के घुमक्कड़ कबीले को मिसर से निकालकर कनान में एक बड़ी जाति के रूप में बसाया था। न्यायियों के समय, इस्राएली परमेश्वर से फिर गए थे और उस व्यवस्था के अनुसार नहीं रह रहे थे जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। इसके बजाय, ''जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था'' (न्यायियों 17:6ख)। यह सब मूसा द्वारा परमेश्वर की चेतावनी देने के बावजूद हुआ, ''जैसा हम आजकल यहां जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना'' (व्यवस्थाविवरण 12:8)।

न्यायियों की पुस्तक में यह वर्णन है कि यहोशू की अगुआई में चलने वाली पीढ़ी के बाद (देखिए न्यायियों 2:7) परमेश्वर ने पापी इस्राएल से कैसा व्यवहार किया।

जहां कहीं वे बाहर जाते हों वहां यहोवा का हाथ उनकी बुराई में लगा रहता था, जैसा यहोवा ने उन से कहा था, वरन यहोवा ने शपथ भी खाई थी; इस प्रकार वे बड़े संकट में पड़ गए।

तौभी यहोवा उनके लिए न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटने वाले के हाथ से छुड़ाते थे। परन्तु वे अपने न्यायियों की भी नहीं मानते थे; वरन व्यभिचारिन की नाईं पराये देवताओं के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत करते थे; उनके पूर्वज जो यहोवा की आज्ञाएं मानते थे, उनकी उस लीक को उन्होंने शीघ्र ही छोड़ दिया, और उनके अनुसार न किया। और जब जब यहोवा उनके लिए न्यायी को ठहराता तब तब वह उस न्यायी के संग रहकर उसके जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता था; क्योंकि यहोवा उनका कराहना जो अन्धेर और उपद्रव करने वालों के कारण होता था सुनकर दु:खी था। परन्तु जब न्यायी मर जाता, तब वे फिर पराये देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते, और उन्हें दण्डवत करके अपने पुरखाओं से अधिक बिगड़ जाते थे; और अपने बुरे कामों और हठीली चाल को नहीं छोड़ते थे। इसलिए यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; और उसने कहा, इस जाति ने उस वाचा को जो मैंने उनके पूर्वजों से बान्धी थी तोड़ दिया, और मेरी बात नहीं मानी, इस कारण जिन जातियों को यहोशू मरते समय छोड़ गया है उनमें से मैं

> अब किसी को उनके साम्हने से न निकालूंगा; जिससे उनके द्वारा मैं इस्राएलियों की परीक्षा करूं, कि जैसे उनके पूर्वज मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही ये भी चलेंगे कि नहीं (न्यायियों 2:15-22)।

बिन्यामीन के गोत्र से शाऊल के राजा बनने पर न्यायियों का युग समाप्त हो गया था। शाऊल द्वारा आज्ञा न मानने पर, परमेश्वर ने उसे सिंहासन से उतारकर दाऊद को इस्राएल का राजा बना दिया था। दाऊद का पुत्र सुलैमान जो इस्राएल पर शासन करता था, जब पूरी महिमा में था, तो परमेश्वर से मुड़ गया क्योंकि उसकी पत्नियों ने उसे मूर्तिपूजा में लगा दिया था। इस कारण, परमेश्वर ने सुलैमान के पुत्र रहोबाम को केवल दो और बाकी दस गोत्र यारोबाम को दे दिए (1 राजा 11:3, 4, 31)। उत्तर के दस गोत्रों को इस्राएल का राज्य और दो दक्षिणी गोत्र यहूदा और बिन्यामीन (लेवियों द्वारा जोड़े गए; देखिए 2 इतिहास 11:14) यहूदा के राज्य के रूप में प्रसिद्ध हुए।

अलग-अलग राजाओं के शासन के बाद, इस्राएल भ्रष्ट हो गया था। यहूदा के राज्य ने थोड़ी देर तक अच्छा काम किया। इसका एक निष्कर्ष नीचे दिया गया है:

> ''तौभी यहोवा ने सब भविष्यवक्ताओं और सब दर्शियों के द्वारा इस्राएल और यहूदा को यह कह कर चेताया था, कि अपनी बुरी चाल छोड़कर उस सारी व्यवस्था के अनुसार जो मैंने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, और अपने दास भविष्यवक्ताओं के हाथ तुम्हारे पास पहुंचाई है, मेरी आज्ञाओं और विधियों को माना करो। परन्तु, उन्होंने न माना, वरन अपने उन पुरखाओं की नाईं, जिन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वास न किया था, वे भी हठीले बन गए। और वे उसकी विधियां और अपने पुरखाओं के साथ उसकी वाचा, और जो चितौनियां उसने उन्हें दी थीं, उनको तुच्छ जानकर, निकम्मी बातों के पीछे हो लिए; जिस से वे आप निकम्मे हो गए, और अपने चारों ओर की उन जातियों के पीछे भी हो लिए, जिनके विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी कि उनके से काम न करना। वरन उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को त्याग दिया, और दो बछड़ों की मूरतें ढालकर बनाईं, और अशेरा भी बनाई; और आकाश के सारे गणों को दण्डवत किया, और बाल की उपासना की। और अपने बेटे-बेटियों को आग में होम करके चढ़ाया; और भावी कहने वालों से पूछने, और टोना करने लगे; और जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था जिससे वह क्रोधित भी होता है, उसके करने को अपनी इच्छा से बिक गए। इस कारण यहोवा इस्राएल से अति क्रोधित हुआ, और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया; यहूदा का गोत्र छोड़ और कोई बचा न रहा (2 राजा 17:13-18)।

कुछ ही वर्षों बाद यहूदा भी इतना भ्रष्ट हो गया था कि परमेश्वर ने उसे दण्ड देने का फैसला कर लिया। ''और यहोवा ने कहा था जैसे मैं ने इस्राएल को अपने साम्हने से दूर किया, वैसे ही यहूदा को भी दूर करूंगा; और इस यरूशलेम नगर से जिसे मैं ने चुना और इस

भवन से जिसके विषय में मैंने कहा, कि यह मेरे नाम का निवास होगा, मैं हाथ उठाऊंगा'' (2 राजा 23:27)।

नई वाचा की भविष्यवाणी की गई

इसी ऐतिहासिक समय में परमेश्वर ने भविष्यवाणी की थी कि वह एक नई वाचा बांधेगा:

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है। और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा (यिर्मयाह 31:31–34)।

नई वाचा उस व्यवस्था जैसी नहीं होनी थी जिसे इस्राएल और यहूदा ने तोड़ दिया था, जो परमेश्वर ने उन्हें मिसर से बाहर लाने के समय बांधी थी। नये नियम के लेखकों ने इस तथ्य को स्थापित करने के लिए कि नई वाचा परमेश्वर की योजनाओं का एक भाग थी, इस पद को उद्धृत किया (इब्रानियों 8:6–13)।

यह भविष्यवाणी जिसे परमेश्वर ने यिर्मयाह के द्वारा प्रकट किया, इतनी महत्वपूर्ण है कि हमें इसकी हर बात पर बड़ी सावधानी से विचार करना चाहिए।

1. *''नई वाचा।''* इस कथन का कि वाचा ''नई'' होगी, अर्थ था कि इसके जैसी कोई वाचा अभी तक नहीं बांधी गई थी। यह किसी अन्य वाचा का दोबारा काम करना नहीं था, बल्कि यह किसी भी पिछली वाचा या उसके जैसी वाचा से स्वभाव में नई और अलग होनी थी।

2. *''ऐसे दिन आने वाले हैं, जब मैं ... बांधूगा।''* वाचा के सम्बन्ध में यह तथ्य कि परमेश्वर ने कहा कि ''मैं बांधूंगा'' का अर्थ होना चाहिए कि यह पहले नहीं बांधी गई थी बल्कि भविष्य में बांधी जानी थी। यह वाचा दिए जाने के बाद परमेश्वर द्वारा दी गई शर्तों के अनुसार उसका काम होनी थी।

3. *''उस वाचा के समान नहीं जो मैंने उनके पुरखाओं से बांधी थी।''* नई वाचा होने के कारण, यह पिछली किसी भी वाचा से जो परमेश्वर ने बांधी थी, अलग होनी थी (निर्गमन 34:27, 28; व्यवस्थाविवरण 4:14; 10:1–5)।

परमेश्वर ने कहा था कि यह वाचा उस वाचा के समान ''नहीं'' होगी जो उसने मिसर से बाहर लाते समय उनके पुरखाओं के साथ बांधी थी। उसी वाचा का उल्लेख क्यों किया गया किसी दूसरी का क्यों नहीं ? इसका स्पष्ट कारण यह है कि इस्राएली लोग मानते थे कि परमेश्वर से उनका सम्बन्ध उस वाचा के कारण ही मजबूत बना था। वे इस पर निर्भर होने के अलावा इसे इस आश्वासन के रूप में देखते थे कि परमेश्वर केवल उनका ही परमेश्वर है, उनके साथ है और उनकी रक्षा करेगा। परन्तु सच्चाई तो यह थी, कि परमेश्वर ने उनकी रक्षा तभी करनी थी यदि वे वाचा को पूरा करते, उसे तोड़ने पर नहीं।

वाचा में उनके भरोसे का एक संकेत इस बात से मिलता है कि युद्ध के मैदान में वाचा का संदूक लाए जाने से उनका भरोसा बढ़ गया था (1 शमूएल 4:5)। दो पट्टियों के साथ संदूक की उपस्थिति से इस्राएल को आश्वासन मिल गया कि परमेश्वर युद्ध में उनकी सहायता करेगा और वे जीत जाएंगे।

4. *''उन्होंने वह वाचा तोड़ डाली।''* दस आज्ञाएं तथा दूसरे नियम ही वह वाचा थे जिसे दिए जाने के दिन से ही इस्राएलियों ने तोड़ा था। उनके द्वारा इसका सम्मान तथा इसे पूरा करने में असमर्थ रहने का बार-बार उल्लेख हुआ है। भविष्यवक्ताओं ने ऐलान किया कि वे इसका तिरस्कार करेंगे (व्यवस्थाविवरण 31:20) और इसे तोड़ेंगे। फिर, बाइबल के वाक्यों से पता चलता है कि उन्होंने इसे तोड़ दिया (लैव्यव्यवस्था 26:15; यशायाह 24:5; 33:8; यिर्मयाह 11:10; यहेजकेल 16:59; यहोशू 7:15; न्यायियों 2:20; 2 राजा 18:12; यिर्मयाह 34:18; होशे 8:1) और टाल दिया (व्यवस्थाविवरण 29:25; 1 राजा 19:10, 14), इसे तुच्छ जाना (2 राजा 17:15), इसमें स्थिर न रहे (भजन 55:20), इस पर चलने से इन्कार किया (भजन 78:10), इसके प्रति विश्वासी नहीं थे (भजन 78:37), और इसे तोड़ दिया (यहेजकेल 44:7)। यिर्मयाह 31:32 में परमेश्वर ने कहा कि वह नई वाचा, अर्थात ''सनातन वाचा'' (इब्रानियों 13:20) बांधेगा जो उस वाचा की तरह नहीं होगी जिसे इस्राएलियों ने तोड़ा था।

5. *''उसे उनके हृदय पर लिखूंगा।''* यह तो लिखा है कि नई वाचा हृदय पर लिखी जाएगी, परन्तु *कैसे* लिखी जाएगी यह नहीं बताया गया है। हमें यह भी नहीं बताया गया कि इस नई वाचा की शिक्षा पवित्र आत्मा के द्वारा हृदय पर लिखी जानी थी या किसी और ढंग से।[1]

6. *''सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।''* परमेश्वर का यह ज्ञान हर व्यक्ति को परमेश्वर के स्वभाव के बारे में व्यक्तिगत रूप से बताकर प्रकट नहीं किया जाता है। परमेश्वर ने ''वे सब मेरा ज्ञान रखेंगे'' कहकर अपनी बात खत्म नहीं की थी, बल्कि उसने उस ढंग की व्याख्या करने के लिए आगे बताया कि सब उसका ज्ञान कैसे रखेंगे: ''क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।'' ''क्योंकि'' का इस्तेमाल परमेश्वर की इस व्याख्या के लिए किया जाता है कि उसका ज्ञान कैसे रखा जाए। परमेश्वर ने जगत के पापों के लिए अपने पुत्र को देकर क्षमा करने वाले परमेश्वर के रूप में अपना सच्चा स्वभाव प्रकट करना था। यीशु ने, जो परमेश्वर का प्रतिरूप था (कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:2, 3) मनुष्य जाति को अपना

पिता का स्वभाव दिखाना था (यूहन्ना 12:45; 14:9)।

सारांश

पुराने नियम में नई वाचा से जुड़ी भविष्यवाणियां तो मिलती हैं, परन्तु नई वाचा की शर्तें वहां नहीं मिलतीं। ये शर्तें केवल नये नियम में ही मिलती हैं। नई वाचा उस पुरानी वाचा की तरह नहीं होनी थी जो परमेश्वर ने मिसर से बाहर ले जाते समय इस्राएलियों के साथ बांधी थी। परमेश्वर ने इस नई वाचा की योजना बनाई, इसके लिए तैयारी की और इसकी भविष्यवाणी की।

पाद टिप्पणी

[1]हृदय अर्थात मन पर अधिक विस्तार से चर्चा पृष्ठ 164 पर की गई है।

परमेश्वर द्वारा बांधी गई एक वाचा

जल प्रलय के बाद, उत्पत्ति 9 में परमेश्वर ने नूह के पास यह घोषणा की कि वह उससे, उसकी संतान (आयत 9) और प्रत्येक जीवित प्राणी से (आयत 10) एक वाचा बांधने वाला है। परमेश्वर ने कहा था, ''जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं, उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिए बान्धता हूं'' (आयत 11)।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने उस वाचा पर मुहर लगाने के लिए एक चिह्न दिया: ''जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सबके साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिए बांधता हूं; उसका यह चिह्न है: कि मैंने बादल में अपना धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिह्न होगा।'' परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि जब भी पृथ्वी पर बादल छाएंगे, वह धनुष दिखाई देगा। मनुष्य की भाषा में, उसने समझाया, ''बादल में जो धनुष होगा मैं उसे देख के यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बान्धी है'' (आयत 16)।

नूह के लिए, यह वाचा दो पक्षों में समझौता ही नहीं था क्योंकि यह बिना शर्त और विश्वव्यापी थी, जिसे परमेश्वर ने बांधा था।